RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper
Available online at: www.rhimrj.co.in

अंग्रेजी शासनकाल में भारत में कला और साहित्य का विकास

रिंकु कुमारी

शोध छात्रा इतिहास विभाग, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

अठारहवीं शताब्दी में व्याप्त परिस्थितियों का ऐसा कोई भी विश्लेषण समग्र नहीं माना जा सकता, जिसमें उस समय प्रचलित विचार–धाराओं का उल्लेख न हो। इन प्रश्नों का भिन्न करके दिखाना कठिन है कि किस सीमा तक लोगों के विचार राजनीतिक परिवर्तनों का कारण बनते हैं और कहां तक स्वयं विचार जीवन की भौतिक स्थितियों की देन होते हैं। यह सरलता से स्वीकार किया जा सकता है कि ये दोनों प्रश्न परस्परत संबंद्ध हैं और यह भी मानी हुई बात है कि इतिहास की जानकारी बढ़ाने में इन दोनों का अध्ययन सहायता होता है।

प्रत्येक देश के इतिहास ने एक भिन्न पथ का अनुसरण किया है। कुछ देशों में व्याप्त प्रभाव वाले राजनीतिक उलट–फेर ऐसे अन्य देशों की तुलना में अधिक जल्दी–जल्दी हुए हैं, हां जीवन का प्रवाह अधिक सहज–सरल रहा है। यूरोप में इटली ने ऐसी महानता प्राप्त की, जो लगभग सात सौ वर्ष तक बनी रही। इसके बाद तेजी से उतार आया और बर्बर जातियों ने इटली को विजित और पदाक्रांत कर दिया। इसके उपरांत उसकी भूमि पर एक बार फिर सभ्यता का अंकुर फूटा, जो पुनर्जागरण की पल्लवित हुआ। उसे फ्रांस से आने वाले आक्रामकों ने कुचल डाला। उसके पश्चात् इटली कुछ समय तक अंधकारग्रस्त रहा। अपने मैजिनी, केवूर और गैरीबाल्डी–सरीखे पैगंबरों, राजमर्मज्ञों और सैनिकों के प्रयत्नों के फलस्वरूप इटली फिर अंधकार से निकलकर प्रकाश में आया।

इंग्लैंड ने संस्कृति की अखंडता का भव्य उदाहरण प्रस्तुत किया है। नार्मन–विजय से लेकर अब तक इसका विकास बाहरी विजय–बाधा के बिना अनवरत रूप से होता रहा है।

भारत ने इतिहास का ढंग तो इंग्लैंड की अपेक्षा इटली का ही अधिक अपनाया है, परन्तु एक अंतर के साथ। इटली के क्रांतिकारी परिवर्तनों में वहां का समाज, शासन व्यवस्था और संस्कृति सभी सम्मिलित थे। इसके विपरीत भारत में होने वाले परिवर्तन क्रांतिकारी नहीं थे और उन्होंने केवल शासकों को प्रभावित किया।

भारत पर हुई विदेशी विजयों ने प्रशासन में ऐसे परिवर्तन लाए, जो ऊपरी थे। समाज की संरचना प्रायः अपरिवर्तित रही। नए धर्मों तथा भाषाओं ने प्राचीन धर्मों तथा देश भाषाओं की संख्या में वृद्धि–मात्र की। हिंदू और मुस्लिम संस्कृतियों में अद्भूत अखंडता बनी रही। उनके उच्चवर्गीय अनुयायी विश्वास और उपासना, व्यक्तिगत विधि–निषेध और शास्त्रीय भाषाओं के प्रयोग में प्राचीन परंपराओं का ही पालन करते रहे।

इन सामान्य उक्तियों का स्पष्टीकरण आवश्यक है। पहली बात तो यह कि जिन्हें हिंदू और मुस्लिम संस्कृति कहकर पुकारा जाता है, वे अपने–आप में समरूप नहीं था। वे एकरूप, आत्मसंगत और सरल सत्ताएं न थी। हिंदू–समाज एक इकाई न था। उसमें तो सांस्कृतिक दृष्टि से अलग–अलग स्तर के विभिन्न प्रकार के लोगों का समावेश था। विभिन्न प्रदेशों की भिन्न–भिन्न भाषाएं थीं। प्राचीन काल में, जबकि शिक्षा कुछ गिने–चुने उच्च जातीय हिंदुओं तक ही सीमित थी, ऊपर के दस व्यक्तियों की संस्कृति उन बहुसंख्यकों से भिन्न थी, जिनमें से बहुत–से लोग अज्ञान, अंधविश्वास और निर्धनता के गर्त में पड़े थे। स्वयं मध्य और निम्नतर जातियों में भी संप्रदाय और विधि–निषेध स्तरगत ऊंच–नीच, व्यवसाय तथा धन की दृष्टि से अंतर विद्यमान थे। इस प्रकार हिंदुत्व विश्वास तथा आचारों का एक ऐसा विराट् दृश्य उपस्थित कर रहा था, जिसमें एक ओर दर्शन के गहनतम सत्यों का और दूसरी ओर अंधविश्वास के निकृष्टतम रूपों का समावेश था।

मुसलमानों में हिंदुओं जितना कठोर और तीव्र विभाजन तो न था, किंतु उच्चतर तथा निम्नतर वर्ग उनमे भी थे। उच्चतर वर्ग अथवा शरीफों में योद्धाओं, विद्वानों और धर्माचार्यों का शासक–वर्ग शामिल था और निम्नतर वर्ग अथवा अजलाफ में निचले दर्जे के वे लोग थे, जो उच्च वर्ग के अयोग्य समझे जाने वाले काम किया करते थे। मुसलमानों के इन दोनों वर्गों में अलग–अलग अनुपात में ऐसे धर्मांतरित व्यक्ति भी शामिल थे, जिनके स्वभाव तथा रीति–रिवाज, रहन–सहन के ढंग और विचार–विश्वास उस मूल वर्ग से मिलते–जुलते थे, जिससे वे आए थे। मुस्लिम देशों से आने वाले नए लोग और उनके पहली दूसरी पीढ़ी के वंशज सांस्कृतिक दृष्टि से उन धर्मांतरित व्यक्तियों और बहुत पहले से चले आते परिवारों से भिन्न थे। यहां यह स्मरण रखना चाहिए कि मुगल–साम्राज्य की शान–शौकत और उसकी सेवा करके धन कमाने की संभावनाओं से आकृष्ट होकर

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved ISSN: 2349-7637 (Online)

ईरान, अफगानिस्तान और ट्रांस, आक्सियाना से विद्वान, सैनिकों की व्यापारी औरंगजेब की मृत्यु तक लगातार भारत आते रहे। उन्होंने आत्मीकरण की शक्तियों को कमजोर किया।

फिर भी शताब्दियों के साहचर्य का अनिवार्यतः प्रभाव पड़ा। पंद्रहवीं शताब्दी से ही कबीर और नानक जैसे हिंदू–सुधारक हिंदू और मुसलमान का अंतर कम करके उन्हें निकट लाने के लिए प्रयत्नशील थे। मुस्लिम सूफी तथा संत–विशेषतः इब्न अरबी के उपदेशों पर चलने वाले–वेदांत के सिद्धांतों और योगाभ्यास में रूचि लेने लगे और उनसे प्रभावित हुए। हिंदू और मुस्लिम साहित्यकारों ने आधुनिक भारतीय भाषाओं तथा साहित्यों के विकास में योग दिया। कलाकारों ने शिल्प, चित्र और संगीत–कला में ऐसी शैलियों का सूत्रपात किया, जिनमें इस्लामी और भारतीय तत्वों का संगम था। सुधारकों ने श्रद्धा पर आधारित जिन धर्मों का प्रचार किया उन्होंने अधिकतर समाज की मध्यम श्रेणी के लोगों को ही आकृष्ट किया, यद्यपि उच्च निम्न श्रेणियों के कुछ लोग भी उनमें शामिल हुए। सम्राटों, राजकुमारों तथा भू–स्वामियों ने साहित्य और कलाकारों को संरक्षण दिया और विद्वानों को भारतीय भाषाओं की पुस्तकों का फारसी में और फारसी ग्रंथों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने अपने दरबारों से संबंद्ध कलाकारों को मिली–जुली शैली में अपनी कलाकृतियां प्रस्तुत करने के लिए भी प्रेरित किया।

हिंदू–भक्ति–संप्रदायों का प्रचार पूरे भारत में हुआ और भक्ति–शाखा ने अपने निर्गुण तथा सगुण, दोनों रूपों में जन–मानस को अपने में आबद्ध कर लिया। इसके अनुयायियों की संख्या का ठीक–ठीक अनुमान लगाया तो संभव नहीं, किंतु यह कहना असत्य न होगा कि भक्ति–शाखा मुख्यतः समाज के मध्यम स्तरों–व्यापारियों, दस्तकारों, शिल्पियों तथा किसानों में ही फैली।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. एस. राधाकृष्ण, 'इंडियन फिलासफी, खंड 2 (लंदन, 1931), पृ. 771–72।
2. वी.ए. स्मिथ, 'ए हिस्टरी ऑफ फाइन आर्टस इन इंडिया एंड सीलोन', पृ. 186।
3. पर्सी ब्राउन', 'इंडियन आर्कीटेक्चर : इस्लामिक पीरियड', पृ0–123।
4. अबुल फजल 'आइने–अकबरी' अनु.(ब्लोचमन, कलकत्ता, 1927), पृ0– 323।
5. डब्ल्यू. एडम, 'रिपोर्ट्स ऑफन द स्टेट ऑफ एजुकेशन इन बंगाल', (संपादक ए. बसु, 1941), पृ. 6–7।

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)